रविन्द्रनाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी एक शैक्षिक चिन्तन

MR SAROJ KUMAR
ASSISTANT PROFESSOR
EDUCATION DEPARTMENT(B.ED)
R.M COLLEGE,SAHARSA
CONTACT NO.-9334195883

मानव शुरू से ही चिन्तनशील प्राणी रहा है। ये चिन्तन ही दर्शन का मूल है। कोई भी चिन्तन कितना ही प्राचीन क्यों न हो उसकी उपादेयता कभी समाप्त नहीं होती है। शिक्षा और दार्शेनिक चिन्तर में अविछिक संबंध है। दर्शन हमारे जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करता है। शिक्षा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है। रविन्द्रनाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी आधुनिक युग के महानतम दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री थे। अपने मौलिक एवं नये विचारों के द्वारा भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी भारतीय संस्कृति के आधार पर ये केवल भारतीय शिक्षा की नींव ही नहीं डाली वरन पाश्चात्य शिक्षा में भी पूर्व एवं पश्चिम के आदर्शों को नये रूप में स्थापित किया।

रविन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधी को महात्मा कहा। इन दोनों व्यक्तियों में बहुत समानता होते हुए भी बहुत भिन्नता थी। उनके विचारों में भिन्नता होते हुए भी दोनों में अत्यधिक पारस्परिक प्रेम था। दोनों ने मानवता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में अपने विचार व्यक्त किये। दोनों ने मानवता को बहुत प्रेम से अपनाया एवं देखा तथा पूरे संसार की भलाई के लिए दूरदर्शी दृष्टा के रूप में जाने गये पर दोनों की पहुँच भिन्न–भिन्न थी। गाँधीजी जहाँ एक सक्रिय कार्यकर्ता थे वहाँ टैगोर एक महान कवि एवं दूरदर्शी थे।

गाँधीजी ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन शिक्षा पद्धति को जन्म दिया। इनके अनुसार शिक्षा की कोई भी योजना या कार्यनीति बने। वह ऐसी हो जो बालक के आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास का अवलम्बन हो। उसमें हस्तशिल्प अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग सेवा एवं प्रेम का बीज अंकुरित कर सके। शिक्षा बालक में चित्र शुद्धि, इन्द्रिय कर सके। शिक्षा बालक में चित्त शुद्धि, इन्द्रिय निग्रह स्वावलम्बन, स्वतंत्र एवं निर्भर तथा सत्य पर अडिग रहने का मार्गदर्शन करने वाली होनी चाहिए।

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर चूँकि विश्व मानव की दृष्टि रखते हैं। अतः सबसे श्रेष्ठ शिक्षा उसे मानते हैं जो सूचना मात्र नहीं वरन् विश्व के साथ व्यक्ति का संबंध स्थापित करती है। टैगोर की शिक्षा का उद्देश्य आत्म साक्षात्कार है। उनकी राय में शिक्षा का अर्थ व्यक्ति का व्यावहारिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान है। टैगोर शिक्षा को मात्र सैद्धांतिक न मानने के कारण कला, संगीत, चित्रकला, रंगमंच जैसे विविध क्षेत्रों से संबंधित शिक्षा के पक्षधर हैं। इन दोनों महान व्यक्तियों ने अपने द्वारा बताये गये शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयास भी किया और हमारा मार्गदर्शन भी किया।

तत्कालीन समय ब्रिटीश काल था अतः अंग्रेजी शिक्षा का बोलबाला था। किन्तु गाँधी जी एवं टैगोर ने मातृभाषा को शिक्ष का माध्यम बनाया और बताया कि बालक अपनी मातृभाषा में कोई भी बात सरलता एवं सहजता से सीख जाता है। अतः उसी का परिणाम है कि आज भी भारत में अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त कर रही है।

गाँधीजी एवं टैगोर निःशुल्क शिक्षा के समर्थक थे। उनके अनुसार प्राथमिक शिक्षा माँ के दूध के समान बालकों के

लिए आवश्यक है। अतः प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क होना चाहिए, जैसा कि आज हमारे देश में सभी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। सभी साक्षर हों इस ओर सरकार द्वारा प्रयास किया जा रहा है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए चौदह वर्ष तक आयु के बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जा रही है। दोनों ही महापुरुषों ने साक्षरता को महत्व दिया।

महात्मा गाँधी जी ने बेसिक शिक्षा के विषय में विचार प्रस्तुत किये तो रविन्द्र नाथ टैगोर ने स्वतंत्र वातावरण में बच्चों को इनकी रूचि के अनुसार कला, संगीत व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने से संबंधित विचार दिये।

गाँधी जी ाक्षा को सामाजिक आर्थिक प्रगति राजनैतिक उत्थान एवं भौतिक विकास तथा नैतिक उत्थान के लिए नव संस्कार मानते थे। रविन्द्रनाथ टैगोर सम्प्रदायिकता को भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते थे। उनके मानवतावाद में सम्प्रदायिकता का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने जाति एवं धर्म की दीवारों को तोड़कर मानव संबंधों के विकास तथा मानवता की स्थापना भारत का आदर्श एवं लक्ष्य बताया।

गाँधीजी परिवार की शिक्षा की पहली पाठशाला के रूप में देखते हैं वहीं दूसरी ओर टैगोर प्रकृति के सहचर्य के स्वयं बालक को प्रेरणा लेने का विचार रखते हैं। रविन्द्र नाथ टैगोर जी के माध्यमिक शिक्षा संबंधी विचार प्रकृति के प्रांगण में खुले आकाश के नीचे पेड़–पौधे की छाया में दिये जाने के पक्षधर हैं। रविन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार बच्चे स्वयं की रूचि के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए और ऐसा करने में प्रकृति से उसका समन्वयकारी दृष्टिकोण होना चाहिए।

रविन्द्रजी के प्राथमिक शिक्षा संबंधी विचार के प्रयोग का उदाहरण उनका विश्वविद्यालय हैं जहाँ बच्चे स्वेच्छा से न कि दबाववश अपने अध्ययन का चयन करते हैं। रविन्द्रजी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा खेल के माध्यम से दिये जाने का समर्थन करते हैं। ललित कला संगीत कला आदि के माध्यम से बालक की सर्जन शक्ति को विकसित करना चाहते हैं। गाँधीजी अपनी बेसिक योजना को हस्तशिल्प कला (क्राफ्ट) प्रधान बाये रखने का समर्थन करते हैं।

रविन्द्र नाथ टैगोर उच्च शिक्षा को देश की संस्कृति तथा सभ्यता को संजोये रखने वाले होने के साथ ही विश्व मानवता की पुरजोर वकालत करते हैं, तो गाँधीजी प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक स्वावलंबन पर आधारित मानते हैं।

रविन्द्रजी ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे, जो व्यक्ति और राष्ट्र की सीमा को विश्व मानवता का पाठ सिखा सके। टैगोर पाश्चात्य विचारों को भारत में अपनाये जाने के विरोधी नहीं थे अपितु वे हमारी अध्यात्मिक विचारधारा से सामंजस्य स्थापित न करके, उसे क्षति पहुँचाए। जबकि गाँधीजी पश्चिम के भौतिकवाद से खिन्न थे तथा वे अपनी सभ्यता संस्कृति को विश्व के प्रत्येक कोने में पहुँचाना चाहते थे और ऐसा अपनी शिक्षा द्वारा ही संभव मानते थे।

टैगोर के शैक्षिक विचारों का जीता जागता प्रमाण उनके द्वारा स्थापित 'विश्वभारती' विश्वविद्यालय है, जहाँ पर शिक्षा को प्रकृति के सहचर्य से देने की व्यवस्था है। गाँधीजी के हस्तकला प्रधान शिक्षा का सजीव प्रमाण 'वर्धा' आश्रम एवं साबरमती आश्रम जहाँ आज भी बच्चे, युवा, वृद्ध शिल्प प्रधान शिक्षा ले रहे हैं।

गाँधी एवं टैगोर दोनों के लिए धर्म आत्मदर्शन एवं नैतिक आस्था समान थी इसलिए धर्म एवं राजनीति के संदर्भ में दोनों ने विचार व्यक्त किये। टैगोर ने विवेक सम्मत नैतिकता युक्त राजनीति का समर्थन किया। वहीं गाँधी ने व्यवहारिक रूप से धर्म एवं राजनीति का समन्वय किया लेकिन दोनों के लिये धर्म प्रचलित अर्थों में किसी सम्प्रदायिक विश्वास के समान नहीं थी। गाँधी के लिए सत्य ही उनका अपना धर्म था जबकि टैगोर का मानवतावाद उनकी धार्मिक अभिव्यक्ति थी। इसलिए दोनों धर्म के बिना राजनीति की कल्पना नहीं कर सकते थे।

उपरोक्त तथ्यों के अवलोकन के उपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि टैगोर एवं गाँधी भारतीय इतिहास के दो महान पुरोधा थे जिन्होंने न सिर्फ भारतीय राजनीतिक इतिहास बल्कि भारतीय इतिहास के प्रत्येक पहलुओं यथा शैक्षिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, कलात्मकता आदि पर न सिर्फ अपने विचार रखे अपितु अपने विचारों से उसे प्रभावित भी किया। खासकर भारतीय शिक्षा पद्धति में उनकी जो अमरकृति है वह भारतीयों के लिए अविस्मरणीय है।

××××